06 दिसम्बर, 2014 को नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित किए जा रहे इंदौर पुस्तक मेले के शुभारंभ के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

देश में पठन-पाठन की संस्कृति को बढ़ावा देने और पुस्तकें पढ़ने की आदत डालने के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों के साथ संबद्ध होना मेरे लिए वास्तव में बहुत खुशी और सम्मान की बात है। जैसाकि सब जानते हैं नेशनल बुक ट्रस्ट देश-विदेश में पुस्तक मेलों और प्रदर्शनियों का आयोजन करके पढ़ने की आदत बढ़ाने और पुस्तकों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया जा रहा इंदौर पुस्तक मेला एक सराहनीय प्रयास है। पुस्तक मेलों के आयोजन जैसे सामुदायिक कार्यक्रमों से सभी आयु वर्गों के लोगों में पढ़ने की आदत को प्रोत्साहित करने में मदद मिलती है। इन मेलों के आयोजन से प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं को अपने प्रकाशन एक ही जगह पर प्रदर्शित करने और बेचने तथा छात्रों और आम जनता तक पहुंचने का अवसर मिलता है।

मित्रो, 1957 में अपने स्थापना काल से ही नेशनल बुक ट्रस्ट महत्वपूर्ण सेवा प्रदान कर रहा है और इसने लोगों को पुस्तकों की ओर आकृष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका उद्देश्य विभिन्न भारतीय भाषाओं में अच्छा साहित्य उपलब्ध कराना है और यह ट्रस्ट उन विषयों की ओर विशेष रूप से ध्यान देता है जो प्रकाशकों द्वारा पर्याप्त रूप से कवर नहीं किया जाता जैसे पर्यावरण, भारतीय भूमि और यहां के लोग तथा ब्रेल पुस्तकें। ये पुस्तकें विशेष रूप से आम पाठकों के लिए तैयार की जाती हैं और ऐसा साहित्य कम दाम पर जनसाधारण को उपलब्ध कराया जाता है। नेशनल बुक ट्रस्ट विदेशों में भी भारतीय पुस्तकों को लोकप्रिय बनाने के लिए नोडल एजेंसी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मित्रो, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी दोस्त हैं। वे हमारी आत्मा को छूती हैं। कल्पना करें कि यदि पुस्तकें ही न हों तो कैसी स्थिति होगी। हम पुस्तकों के बिना क्या करेंगे? पुस्तकों और पाठकों को एक - दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। आपको याद होगा बचपन से ही हमें पुस्तकों का महत्व समझाया जाता है। इनसे हममें आत्मविश्वास आता है और हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। ये भी सच है कि जितना हम पढ़ते हैं उतना ही समझदार और ज्ञानवान बनते हैं। पुस्तकें न केवल ज्ञान का स्रोत होती हैं बल्कि पढ़ने वालों के लिए एक अच्छा अनुभव भी होती हैं। इन्हें कॉफी के कप के साथ और फुर्सत के समय पढ़ा जा सकता है। हालांकि ये निर्जीव हैं फिर भी इनमें ऐसा आकर्षण होता है कि लोग इनकी ओर खिंचे चले आते हैं। मौन होकर भी ये हमसे बातें करती हैं और हमें अपने विचारों और भावनाओं को अधिक स्पष्टता से समझने में भी हमारी मदद करती हैं। ये हमें अहसास दिलाती हैं कि हम वास्तव

में कौन हैं और हमारे जीवन को सार्थक बनाती हैं। पुस्तकें पढ़ने से हम अच्छे विचारक और संभवतः अच्छे इंसान भी बनते हैं।

पुस्तकें पढ़ना हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों के लिए ही अच्छा होता है। इससे हमारा शरीर और मन शांत होता है। यह बहुत ही जरूरी है क्योंकि आजकल अपनी व्यस्तता के चलते हम शांत और मौन रहना भूल ही गए हैं। फिल्म, टीवी, कम्प्यूटर या इलेक्ट्रॉनिक गेम में लगातार होने वाली मूवमेंट, रोशनी और आवाज से तनाव बढ़ता है। जब हम पढ़ते हैं तो हम शांत होकर पढ़ते हैं और सफेद पन्ने पर काले प्रिंट से हमारी आंखों और दिमाग पर ज्यादा दबाव नहीं पड़ता।

पुस्तकों से हमें प्रसन्नता की अनुभूति होती है। यही कारण है कि पुस्तकें पढ़ना पूरे संसार में सर्वाधिक लोकप्रिय शौंक है। पुस्तक प्रेमी अपनी प्रिय पुस्तकों को पाने के लिए पुस्तक मेलों में बड़ी संख्या में आते हैं और जब वे इन्हें खरीद लेते हैं तो ये पुस्तकें उनकी अमूल्य संपत्ति बन जाती है। कुछ लोग तो घर में छोटे-मेटे पुस्तकालय ही बना लेते हैं। वे इन पुस्तकों को पढ़कर बड़े ध्यान से इन्हें संभाल कर रखते हैं और अगली पीढ़ी को सौंप देते हैं।

मित्रो, प्रौद्योगिकीय प्रगति की बढ़ती हुई गति से पठन-पाठन की संस्कृति में बदलाव आए हैं। लोकप्रिय इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफार्म से नए साधनों का सृजन हुआ है और बहुत सारी लोकप्रिय पुस्तकें इलेक्ट्रॉनिक फॉरमेट में उपलब्ध हो गई हैं। हालांकि अमेजॉन, किंडल, एप्पल, बार्नस एंड नोबल, आई-पेड, आई-पोड आदि जैसे सभी लोकप्रिय इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफार्म पर इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों का बोलबाला है और इनसे प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री कुछ हद तक कम हुई है किंतु इससे प्रकाशित पुस्तकों की लोकप्रियता कम नहीं हो सकती।

यदि हम वास्तव में लोगों में अध्ययन के प्रति रूचि पैदा करना चाहते हैं तो शुरूआत हमें बच्चों से करनी होगी। हमें बच्चों में पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। मैं माता-पिता, अध्यापकों, लेखकों, प्रकाशकों और पुस्तकालयों-सभी से अपील करती हूं कि वे बच्चों को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि नेशनल बुक ट्रस्ट ने विभिन्न भाषाओं में बच्चों के साहित्य का संकलन, समन्वय, योजना तैयार करने और उनके प्रकाशन के लिए राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र की स्थापना करके इस दिशा में पहल की है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि संसद ग्रंथालय में एक बाल कक्ष है जहां बाल साहित्य का बहुत अच्छा संग्रह है।

मित्रो, आजकल पुस्तकों की बढ़ती कीमतें चिंता का विषय है। मैं समझती हूं कि पुस्तकें सस्ती होनी चाहिएं। पुस्तकों की बढ़ती कीमतों के कारण कई लोग पुस्तकें नहीं खरीद पाते। कई

बार वे पाइरेटिड पुस्तकें खरीदते हैं जो अच्छी आदत नहीं है। पुस्तक प्रकाशन को केवल मुनाफे का जरिया नहीं बनाना चाहिए। प्रकाशकों को चाहिए कि वे पुस्तकों को कम कीमत में उपलब्ध करायें रखना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग पुस्तकें खरीद सकें।

मैं एक बार फिर नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा सभी आयु वर्ग के लोगों में पुस्तक पढ़ने के प्रति रूचि पैदा करने के लिए किए जा रहे प्रयासों के लिए उन्हें बधाई देती हूं। इन्हीं शब्दों के साथ मुझे इंदौर पुस्तक मेले और इससे जुड़े अन्य समारोहों का शुभारंभ करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है।

धन्यवाद।